हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, Sem II

विषय— भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य, खड़ी बोली हिन्दी गद्य का विकास :—

हिन्दी का जन्म प्राकृत भाषा के प्रवाह में विकसित अपभ्रंश भाषा से हुआ। प्राकृत भाषाएँ भी गद्य-पद्य में समृद्ध थी। अतः समृद्ध जननी के संतान समृद्ध होगी ही। अतः समृद्ध मनीषा से युक्त हिन्दी भी जन्म से ही समृद्ध मिलती है। अतः पद्य और गद्य भी हिन्दी में साथ-साथ विकसित हुई होंगी।

भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य का प्रथम ग्रन्थ 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' है, जो अकबर के दरबारी कवि 'गंग' द्वारा लिखा गया था। इस ग्रन्थ को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि मुंशी सदासुखलाल और लल्लूलाल से 62 वर्ष पहले खड़ी बोली गद्य के परिमार्जित रूप में पुस्तकें आदि लिखने का व्यवहृत होता था। असम में पन्द्रहवीं शती के भक्त प्रवर माधव-देव के नाटक मिलते हैं। उनमें गद्य

का प्रचुर प्रयोग है। यह गद्य सरस भक्ति-भाव से ओत-प्रोत है। असम में इनकी भाषा भी 'ब्रजावली' मानी गयी है। इन नाटकों के उद्घाटन से हिन्दी के गद्य का विकास पूर्वोत्तर में हुआ।

गद्य में तीन प्रकार के प्रयत्न हो रहे थे। एक तो धार्मिक और साम्प्रदायिक परम्परा की रचनाएँ थी, जिनमें या तो सैद्धान्तिक चर्चा या व्याख्या थी, या किसी महापुरुष के जीवन पर धार्मिक श्रद्धा से प्रकाश। दूसरा प्रयत्न था लौकिक विषयों का विवरण। तीसरा था अपने समय में लोक-भाषा को समझने-समझाने के लिए व्याकरण-रचना के प्रयत्न।

धार्मिक क्षेत्र (गद्य प्रवृतियाँ)

प्रथम धार्मिक-साम्प्रदायिक गद्य में दो प्रवृतियाँ मिलती हैं — (1) व्याख्यात्मक — ये अधिकांश पूर्वाचार्यों द्वारा लिखित रचनाओं के आधार पर लोक-भाषा में रची गयी हैं।

(2) वर्णनात्मक कथा — इन कथाओं में सुन्दर वर्णनात्मक प्रसंग भी आये हैं जिनमें लेखक ने गद्य-काव्यत्व प्रस्तुत किया है।

ये प्रसंग अधिकांशतः जैन महापुरुषों के चरितों में आये हैं या फिर उन्हीं में प्रचलित प्रसिद्ध कथाओं में आये हैं।

(2) लौकिक क्षेत्र — लौकिक क्षेत्र में कवि शिक्षा पर वर्ण-रत्नाकर जैसे ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें यह बताया गया है किसी वर्ण्य-विषय पर कैसा कुछ लिखा जा सकता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया कि वर्णरत्नाकर में नाना श्रेणी के मनुष्यों, मानव व्यापारों, समाजों, उत्सवों आदि का वर्णन है।

इसके साथ ही दो प्रवृत्तियाँ और मिलती हैं। एक तो विविध देशों का वर्णन करने की, दूसरी विविध देश के नागरिक को अपने देश के संदर्भ में अपनी भाषा में विवाद। साथ ही नख-शिख वर्णन भी। इस कालावधि में हमें गद्य के कितने ही रूप पनपते मिलते हैं। एक बात पर ध्यान देना होगा, और वह है कथा कहने की परम्परा का प्रमाण। कथा-व्यास एक प्रबल माध्यम था शिक्षा प्रदान करने का।

भारत में ईसाई मिशनरियों के भी अड्डे केन्द्र स्थापित हो गये थे, इन केन्द्रों से धर्म-प्रचार-प्रसार का कार्य चलाया जा रहा था। अतः इसके लिए मिशनरियों ने हिन्दी का सहारा लिया। अपने धर्म-ग्रन्थ हिन्दी में ही अनूदित कराये। इसके लिए पद्य के लिए नहीं गद्य की आवश्यकता थी। अतः यहाँ गद्य पनपा और वह गद्य खड़ी बोली की थी। अतः खड़ी बोली ने ब्रज, अवधी आदि से ऊपर उठकर "हिन्दी" भाषा नाम ग्रहण किया। इस प्रकार गद्य ने पद्य को परास्त कर दिया।